

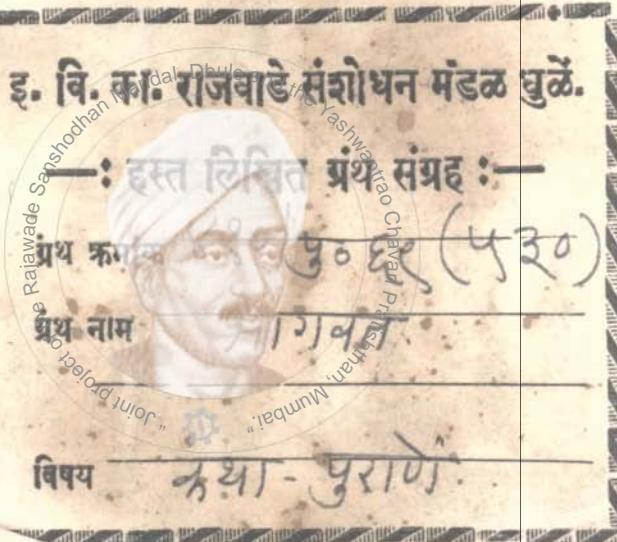
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५०८२ (५३०)

ग्रंथ नाम गंभीर

विषय नाया - पुराणः



श्रीमाता जयराम
मंजूरन
जयराम॥
काल्याल



लाला द्वारा बनाया गया
मुम्बई

Joint Project of the Royal and Gajipore Laland-Dhule and the Yaswantrao Chavhan Prajatantra, Mumbai.

॥ नावनम् ॥ १० न स हुस्त्व यार्णव नु से द क पे सी ना हिं या
दा ॥ जा रि सी जी ब इ जी उ मा व सो ड उ नी ॥ १ नुं ड उ नी दे ह बु द्धि
नि ति वो पा ई ॥ मङ्ग ता रि सी मृ वा ब्धी दग पा नि ई इ पा बु वा ॥ २
तु
गा त सं मुणी नि द्वि विली ॥ नि द्वि चु नि आ प परा नि सं ना न
को ॥ रा ॥ तो नु जी ब लग सो य रा ॥ ब्रु पा व रवा घडे क वी ॥ जे वी
बां धा र ना द ने द ई ॥ मा स्पर्त न क त्र रवा वी ति का टी ॥ ने बां धा र ल ध धा
टी ॥ ते वी नु सी भ्रेटि सा टु का ॥ तु स जे ये सा चार से टी ॥ तु वा के लि या लि
पा द ई ॥ सं सार के दा च्चि त्री पु टी ॥ तु गुणे सी नु श्वि दि से ना ॥ ६ ॥ न दे र वठ
नी गुणा दि श्रृ ई ॥ दा रव वि सी ल द्वय ल ई द ई ॥ या सी कदा न के द ई ॥ से ई
भ्रेटि सी नु टी कदा न प डे ॥ ७ ॥ जो कदा न दे रवी जे द ई ॥ सा सि के वी हो ये
द ई भ्रेटि ॥ भ्रेटी सी कदा न प डे नु टी गह झी गा ई घ डे के वी ॥ ८ ॥ डे सा गर्भ मा
ते चा पे टि ॥ व्या सो नि माउ ली न दे रवे दी गी ॥ तं झी नि चे भ्रेटि सी न के नु टि
ते वि नु सी पे टि सा य का ॥ ९ ॥ मा ना क व व छे नी यो ब्धी ता ने ॥ से र्वी ते माउ
ली ते ने णे ॥ ते वी नु जमा जी व्या सा ने ॥ तु बां प्रति पा व णे नि जला सा ॥ १० ॥ ज

४
२४

न्मल्यावाक्का कारणें। मानावाटवीक्षाहणपणे, नेवीतुसनीनिजशान
संशानहोणें साधकीं॥११॥ साधलियानुसंशान घितेनारबेशीतुपण। जी
उविसरला जीउपणव्यद्वयपूर्णपरमासा॥१२॥ आसातुयाबहुतगोठि।
नक्कलासहुत्तदपाठाई॥ करतोपृथुपायाच्यामेटि नक्के
भेटिपरमाई॥१३॥ संहुत्तदपाठाई॥ साधनेपवनीउगाउति॥
ब्रह्मानदेकादेंमृष्टी॥ खानदेंपूर्णसाधकी॥१४॥ जालियासहुत्तदपास्रा
उपनिषेदाचानिजमधिताय। सात्तदाच्याचियाचेहात। दृष्टपासम
र्थगुरुत्त्वीकृष्ट। सहुत्तदपासमर् गुरु नुपाश्रीमागवन। बारवाणीलेजी
प्राप्ततत। मुधप्रचितार्थसोलिव। नाईनीदृष्टपाठाई॥ मास्यामहुत्त्वा
प्राप्तिरवागेवि। रिघाल्यायेकादृष्ट्याचपाठि॥ स्यानदनुष्टिनिजबोधे॥१५॥
संहुत्तप्राप्ततपरवडी। संशानसविनीखानदगोठी॥ गायकाळीज्ञाणीना
बडि दुष्टिवाकुटीचवीनाही॥ नेवीसंहुत्तप्राप्तत भाषा। ब्रह्मासीपा
लट नाहिंदरवो। ठमयेज्ञामेदेवदलायेको। साहुनिजसरवाजनाईनि॥१६॥
नोनो भेद्यकी जोनार्दनहुपेत्तकज्ञाण। ओरविसांव्याचेनिरोपण। गुण्डेगभीर्य
चानदचन। नेहिकेलेव्याख्यान। आतिसुध॥१७॥ नेयेनानाविद्याउप

निज साक्षात् नयु ॥ त्वयेवोलिलाश्रीपती ॥ ब्रह्मस्थितीनिष्टक ॥२१॥

त्रिलोक ॥ द्वै पर्वतुणी तेयेहेतमान व्याहुपान ॥ नरिघबुष्ठियुक्ति सिमन
आगम्यजाण सवी यी ॥ ३ ॥ नाहि देव्यद्वारादर्दन ॥ नाहि घये घ्याता
यान ॥ कर्मकर्ता कारण ॥ मित्रपण व्यासना ॥ अ ॥ युक्तीन साडिला प्रा
ण ॥ हृषींवार्तीली आण ॥ प्रभाण जाली व्याप मान ॥ वें दें सीक्षण विवे
क जाल ॥ ४ ॥ तेयें बोल न प्रौढ़ ॥ व्याकार नास्तु न्ये ॥ गुणना निर्गुण ॥ स
मुखजाण व्यासेना ॥ ५ ॥ यें सीब्रह्मानि निजस्थिती ॥ इक्ष्वाक्षपात घवा
सीश्राप्ति ॥ आबछांसि नकक निक्षिती ॥ जनके स्यातीन तरेल ॥ ६ ॥

त्रिभस्थिती अतिदुर्गमध्येत घवास ॥ कवचें वर्म ॥ साधकानें साधा
व्याकाम ॥ उपावसुगमपूर्स्तु ॥ ७ ॥ उक्ति सावी निरोपण ॥ ब्रह्मप्रा
प्ती चें सुगम साधन ॥ सप्रेममग्न्हजन ॥ ते भक्तिलक्षण हुरासां
गे ॥ ८ ॥ सुगमसाधने ब्रह्मप्राप्ति ॥ आबछांसि लाक्षके स्यातीध
सायें त्लाकिंदेवा सिविन ती ॥ उघवत द श्रीकिरिल्पा ॥ ९ ॥ लाक
उघव उवाच ॥ सुदृष्टि सामन्तं प्रवन्य योगचर्यामनापन ॥ प
र्यात्तापुनानि अयेन व्यम वृद्धुज सा अकेत ॥ १० ॥ टिकी

३

८

२

३८

पुर्वाध्याई ब्रह्मस्थितीं सागीनलीते दुर्गमगतीं स्रोत्या भाविका
 प्रनी ह क्रह्मप्राप्ति साधेना॥३०॥ वस्तु वेत्तना वावेन्म से निविष्ट
 गरनानकं गुप्त न केले मुर्तकि प्यामुर्ति के बीसाठ्यकाने ये प्रवशु
 आहे॥३१॥ जे स्युलना सुक्षम होया जेन्नाहा दाव्यना साहा जे याहा हांता
 माहाणदोन्ही जाये तेंसा दाका फायके विप्राप्त॥३२॥ जे दिसे नंजे
 द्वृष्ट्युणावे नवन मात्रारूप नावे आनाना हीच्चि अशोभि साडाव
 तेले हिं नाडा वें साधकी॥३३॥ तेला करना न के शुन्य नेयन रिघ
 घ्यये ध्यान॥ ज्ञासिला जर यज्ञन॥ खाने साधन स्वर्ण ना॥३४॥
 जेनदेव दाव्याच्च हात जे नाहात बांतु बाहेरि नाहिजे
 य काये साधकि तेये साधवे॥३५॥ जाहिं बांतु बाहेरि विचारा नेय
 कायधावे निधारा॥ जे यन्निधीस्तद्विपुरा द्वारा विधीरन द्वारा
 ॥३६॥ साधकि स्तीर करावयामन॥ काहिन दिसे व्यावलब्न येये या
 वदेय अज्ञान जन॥ या सिद्धस्तर जाणहायोग॥३७॥ यापरीन जासु प्रसी
 कदान च दे यावं हाति॥ मजतंव मानले निश्चिती देव्या सुस्थिती द
 स्तर॥३८॥ ऐसी ब्रह्माच्चि ब्रह्मप्राप्ती आशन यासे पावती॥ तेसी

सुगमस्ताधनस्तिनी॥ सागश्रीपनीहृषकुवा॥ १९ तुवानिजधामाप्र
याण॥ माडि व्यासेंवृरेन॥ येथेंतरावयाव्याल्लान॥ सुगमसाधनसागी
जे॥ २० ह्यं औनिधानले लोरांगण॥ धावोनिधरिले श्रीचूरण॥ तुजगेलि
यां अल्लानजन॥ तरावयासाधनसुगमसांग॥ २१ यकृष्णियापत्तिसपारे
उत्तारा॥ ल्लियावाक काव्यातिसोणग॥ तैसियातु पायेप्रकारा॥ सारग
युरासांगिजे॥ २२ तुसागरस छावुण॥ अगिनेणति त्राव्यज्ञान॥ ऐसे
जैवाल्लानजन॥ तरावयासापनसुगमसांग॥ २३ मनोनिग्रह व्यातिक
ठिण॥ साधकांनेमवणाचपुण॥ निति वार्थीचिनिरोपण॥ द्वाव्यापण
सागन्॥ २४ उघउवाचे॥ प्रायेतःपुरोकात्॥ युंजनोयेगिनोमना॥ ॥ ३॥
विक्षेदनसमाधानन्मनोनिग्रहका ने॥ टुक्का॥ ऐकस्फृणक
मूर्कनयना॥ सिणतासाधके साधना॥ कदानाकचबमना॥ जेहि
विवचना व्यावधारि॥ २५ निग्रहहावयानिजमन॥ साधके साधी
तिप्राणापान॥ यासिदुच्छुनियांमन॥ जायेनिद्योनितकूक्का॥ २६
चालुनियेकातिव्यासन॥ मनोनिग्रहीजेसावधान॥ यासहि
रकुनियांमन॥ जायेनिद्योनितकूक्का॥ २७ मनोनिग्रहीर्वा

५८

स्त्रीहाटि॥ स्त्रेनिरिघोलेगिरिकपाटि॥ द्यासिहिरकुनिमनसे
वृटि॥ जायउगउरिच्यपछवै॥ अथायेकिप्याकेव्यावयामन॥ द्यजु
निवेसलभान्न॥ तंवमनेकेलेभाना भान॥ जागतिसप्रव्यानमये
॥ अथायेकिप्याकेव्यावयामन॥ प्रजुनिवेसलेभान्नमनेभनेकेलभा
न्नमभान्न॥ जामुतिस्वप्यामयेभान्न॥ ६॥ मनोनिग्रहकरितादेरव॥ मन
खवक्ष्येभायिकाप्यायिक॥ मनोनेमिसशानलोक॥ सिणलसाधक
साधनि॥ ७॥ वाराकांद्यवेलमोर॥ आग्निशाकावलप्यावचट॥ समुद्र
द्याटवेलघोट॥ मनप्यामनिष्टहस्तिमय॥ ८॥ अप्याकाढाकरवेलघोद्यडी
माहामेत्कांद्यवलेपुर्ढी॥ कुन्याचिमुहवलनरडी॥ तर्हीमनाच्याकाढीप्या
णिवार॥ ९॥ काक्षजिंकवेलत्॥ १०॥ मृबनीलामेलसंता॥ परीमनो
निग्रहाचिवान्न॥ तुजविणघच्यूताद्यडना॥ ११॥ मननापूसातकाक्षर्वी
मननेमस्तानेमठाक्षी॥ मनवक्षियामाजिमाहाक्षी॥ करिरांगाक्षीघोर्या
ची॥ १२॥ मनर्द्रातेंतक्षिंपाडि॥ मनब्रह्मयोतेहटचिपाडी॥ ऐसीमनावारव
टीखोडीप्याकोटीनावरे॥ १३॥ आद्यनसाधनिसाधकसिणना॥ मनेज
योनयेचिहाना॥ तुजवांचुनिअच्युता॥ मनतहृतानावरे॥ १४॥ उर्ध्यनसा

(S) शुनिनिर्वडी॥ मनोजयो आणितं जोडी॥ तं च सिद्धि चिदार प्राडा दुडी॥ ते रें
नी प्रनजाडी साधकं॥ ६॥ तु शीक्षण वहतां जाण॥ साधकं कदानागवे म
न॥ तु नुष्ट ल्याज नाईन॥ मनपणे मन स्वयं विर॥ ७॥ सर्वभावेन रीघ
तां शारण॥ साधकं कदाजागवे मन॥ मनानि ग्रहार्थ जाण॥ तु श्याचरण
शारण रीघवे॥ ८॥ श्लोक॥ ठधठवाच्या आनव्यानदहृष्पदं वुजे॥
हं साक्षयेरन्मर विदलोचन॥ सुरवनुवि श्वेतवरयोगकमिं॥ स्वमायया
मी विहतान मामिनः॥ ९॥ टिटव॥ कमवापती कमव्लवदन॥ कमवा
लयाकमव्लनयन॥ नामिकमव्लवासता॥ तुवा ब्रह्मज्ञानाभिष्ठें
॥ १०॥ एतु श्याचरणीचे चरण॥ तु श्यादहृष्पदज्ञास्त्रिहाये प्राप्त॥ मना
जयो एयाचाप्तकिन॥ तो हायप्रिवलमवस्था॥ ११॥ तु श्याचरणामृता
चिगेडी॥ मनोजयातेनाक्षांजाडा॥ आधी व्याधी मवपात्रानोडी॥ श्या
नदकोडी साधका॥ १२॥ सकव्लसाधनाचे निजसार॥ योगसांरब्धविवे
कसघर॥ यासाराचे निजसार॥ तु शीमक्षिं साचार श्रीदहस्ता॥ १३॥ जा
णे निमक्षीचे रहस्य॥ भजनप्रेमालोधलेमानस॥ तेचिविज्ञान राजहंस
भजन सारांश सेविती॥ १४॥ काया वाचा आणिमन सद्गावे सदासप नं

४५
ऐसियां भक्तं तु मे चरण ॥ स्वानंदे पुर्णदुमती ॥ ६५ ॥ धर्म अर्थ का मे
का सि ॥ संगो साधने साधि द्यासि ॥ विकल्प जालियां साधना सी ये सा
धका अपवा ॥ ६६ ॥ ने सी नं वनु सी मक्ती न वहे ॥ तु ज मजनां जिवें मावे ॥ म
का सि विद्युक दान पवे ॥ से श्रिवभक्त नागव विद्युत्सी ॥ ६७ ॥ जै सूर्य वा
णि रवद्यो नासि ॥ मे टिहो ये सात कासी ॥ न की विद्युत्सक्ता पासी ॥ घिरय
वियासी ॥ न धरिती ॥ ६८ ॥ पुडुनां चानना चिद्याणि ॥ होय प्रदगजां पब
धी ॥ ते बीतु स्यामा वार्थ मजनी ॥ होये छुक्ले द्याणी विद्युति ॥ ६९ ॥ ये नें चि
नि त्रये सुख संपन्न ॥ तु ज्ञाचर दी उपन त्ये तारण ॥ द्यासि नान छजन्म भर
ण ॥ माई तर विद्युते कै चै ॥ ७० ॥ ये यों भावे जेठन्मन्य तारण ॥ द्यासि तु मनि
ज चरण ॥ स्वानंदे सदाकरि पुरा ॥ दी क्राम धेनु वच्छासी ॥ ७१ ॥ मक्ती सु
गो वर निर्मल ॥ न व विद्युत्सीर सीर सी कज़े ॥ ते ये तु मे चरण क मढ़ ॥ विकासा
कै व लमा वार्थ सूर्ये ॥ ७२ ॥ ते य स्वानु मवे क मन्मर ॥ इं पावो नियां वर वार
कुंच बोने दिनां क सर ॥ आमो इसार से विनी ॥ ७३ ॥ ते ये विवे की पर महंस ॥
ते सरो बरी चे राजहंस ॥ चरण कूमछी कल निवास ॥ आमो द सुरक्ष से विनी
॥ ७४ ॥ होका ज्ञान डिज्ञासु ज्ञायां श्री ॥ ते हि ते द्यास रो वरि वसती ॥ यरि क

॥४॥

म्रव्वा मोदनेण ॥ तद्दीं क्रीडतीक मवातविं ॥ १८ ॥ ऐसिया स्नोव्या महां
सि ॥ तुला रिकाहृषीकेशी ॥ एवं जैजैला गृह्ण कीसी ॥ आपावो मांसी व्यासेना ॥ १९ ॥
मावेकरितां तु संभजना तु मावाये हासीश सन ॥ तु सौषध सन्नता तु
स्मृचरण ॥ स्वानद पुर्ण वर बती ॥ २० ॥ तु विस्वसुति विस्वस्वत ॥ ब्रह्मा
दि काचार्इत्वत ॥ तु साजालिया अस्य यक्ष ॥ मक्ता मव मारुत्यर्वना
॥ २१ ॥ यापरि मजन मुख्ये ॥ मक्ता तापि सीनिजामुसुख्ये ॥ तेण सुखा
न्ये निहरिरवे ॥ आनि सोतो षे दुलसी ॥ २२ ॥ एवं छर्यये द्वितां मत्तुजन ॥
तु निजसुख्ये करि सीपुर्ण ॥ तु तजेन धनी चारण ॥ ते मायेन जामा हिले
॥ २३ ॥ जेतु माचरणा सीविसुख ॥ ते मीहीन देवनी सुख ॥ चटतें वा
टतें ज्ञे गिरी दुर्ख ॥ मायेन सुख्ये तेक ॥ २४ ॥ यज्ञनितु संचरण ध्यान ॥ ४॥
करि ताया गया मक्ता याइन ॥ तेन साध कोहोये बघन ॥ रववक्ष
अभिमान इण त्रुहें ॥ २५ ॥ पुर्व श्लोकीचा चरण ॥ २६ ॥ द्वै न्माय यामिवी
हितान मानिनीन ॥ २७ ॥ टीका ॥ हाची श्लोकीचा अंतीलचरण ॥ २८ ॥
मुनीयां आपण ॥ पंडिता चाइना मिमान ॥ खुमक्त पूण प्रकाशी ॥ २९ ॥
आह्नी इंत आह्नी योगी ॥ आह्नी प्रवर्तक कर्म मागी ॥ आह्नी ओळी

पूर्वीत्रजगीं प्यामचा मार्ग अनिशुष्ट ॥७॥ लोकेकेवद्य आशान
तैसे प्याह्यीनहो अपण आमन् वच्चैन प्रमान ॥ सूर्याथीजाण श्रीद्वाला
॥८॥ प्याह्यीशाने हें मानुनि हटे ॥ शाना भिमाने कलं मृद ॥ पांडी हों हाड
निगर्वास्त ॥ दुःख दुर्वाढ भोगिती ॥९॥ आभिमाना ऐ सावेरि ॥ ध्यान
नाहीं सौं सारी तोही शाना भिमाने कहरी धाली दुसरी सशान ॥१०॥ पा
सो हें आम का चिकया जेद्युकले चीपं या याला भिनाना परि च्या
वेथा देहे अहंता सौं सिती ॥११॥ जी हि भ्रक्ती सिविकुन चित जाले
आनन्द वारण गत ॥ याभिना लाला नाथ निज सूरवे निज भक्त न
दवि सी ॥१२॥ तुझे जेकां भक्त जन ति हि भ्रक्ती सिविकि लाप्राण ॥ एषासि
नभगतां ब्रह्म शान सहज जाग उस वे ॥१३॥ तुझे करि तो निज भजन ॥
भक्ती सिके दान बाधी विघ्न ॥ सुख फ़ाना सुख संपन्न ॥ हेन वल कोण गावि
दा ॥१४॥ उधउवाच ॥ किं चित्रमन्त तवेन हत्रो बबंधो दासे द्युनन्दन
रण रुषु यदास साहं ॥ यो तो च यह सह मृगेः स्वयमी चराणा श्रीम
किरीह तट पीटि न पाद पीठइ ॥ भाटी का ॥ विघ्न बाधी तुस्या भ्र
ह्नो सी ॥ हेन ववन कहे हषी के झी ॥ तुमुलो मक्कि भ्रेमासि ॥ भक्ती धी

१६॥

नहोसीसर्वदा॥१८॥ जेनुजखनन्यवारबण॥ तुसर्वदाहाया
धीन॥ तेचियां धीचैंनिरोपणे॥ उधवखापणसागतु॥१९॥ हो
उनिनिजदासांया धीन॥ मङ्गरातिपुरविसीयन्॥ सेरिविनुजन
त्रिक्वेचिभोजन॥ मूकेल्याणनमाजीचैं॥२०॥ उसयेसेनेचिदेव
टि॥ त्रात्रसुटनाकेडाढी॥ तेजेमालिसीरयाचिवोटी॥ सेरिवया
चिद्योडीहुंयसी॥२१॥ हसासुकटनाकछवेदासी॥ तेयमक्षाचाचा
लुक्क्वेखाचिसी॥ देरखतांसक्क्वेहायासी॥ रणीद्योडीघुसीनिजा
ग॥२२॥ वागारयूनियादाति॥ च्यांद्योडीचङ्गहाति॥ घुतानलज ॥२३॥
सीक्कीपती॥ मक्काधीनत्रिक्कित्रागा॥२४॥ बंडीसाडविलज्यासी॥
तोउग्रसेनखामीकरित्ती॥ तुच्छयभीचैकाटीसि॥ सेरिविगार्इरवसी
नदोच्या॥२५॥ असासेतुयोरयांचिमानु॥ तुच्छिमिक्केनिगावल्याआ
दु॥ उसउस्याचिरवासिमानु॥ द्येवेनाचतुयाचेनी॥२६॥ नह्यणसीसोव
चेवेंवें॥ प्रयङ्गकेहुवगेवें॥ याच्छितुच्छिरकवें॥ स्वानदेवेव
दुल्कसी॥२७॥ दृपदीच्छिपतिसाकडी॥ तेसनिजालोसीच्छिगडी॥ गो
पिक्कांचेनिजायावडी॥ कुडीविकडीनाच्छुसी॥२८॥ यणकछसुन
तापाही॥ काटामाडलागायिकाच्यापार॥ तापावधोलारानेहा

तिदेहि॥ तुकांटालवलाहीफेडिसी॥५॥ रवादि बाईलदुर्वासासि
द्वारपावतंब क्षिपासि॥ ऐसाभक्तं धीनदुहोसी॥ वचनेवर्त्तसीदासा
च्या॥६॥ दैवानुरेसेम्मणसी॥ गोवक्करवेसयमानिसी॥ तेनुजनद्यडहृ
षीकेत्री॥ तुपुज्यहोसीसुरवर॥७॥ पुर्वश्लोकिचेपदा॥ श्रीमत्तिरीटन
टपीडीनपादपीटः॥८॥ टिका॥ मुद्रन्द्रन्द्रप्याणिमहेंद्र॥ ब्रह्माब्रहस्यनि
प्याणित्तकर॥ ऐसेपुज्यडेकाइस्वर॥ तेहात्तसेकीकरम्भीद्युष्णा॥९॥ तु
झेप्यासन्नाचेपादपिति॥ यान्यामुगुटपणीच्याकोटि॥ घर्षणीमणका
रउठि॥ नमस्त्वारीदारीसुरवर॥१०॥ जीआशानमनिनां॥ ब्रह्मादि
काचीपेमायां॥ साटवाडोजी॥ तेहात्तना॥ नरांजीतेकोण॥११॥ तुसेप्याशो
ज्ञेयेज्ञाण॥ वायवागवीनेमस्तप॥१२॥ सुयोगिलवीदीनमोन्॥ तुसे
आडेज्ञेयेगेविदा॥१३॥ तुसेज्ञारत्तमयेमागी॥ समुद्रमयोद्दानु
लंधी॥ तुसेआरेनयोगी॥ वत्तद्विजमद्विजच्छज्ञाहै॥१४॥ तुसेआ
ज्ञेत्तिप्यागाययोरी॥ त्वयेमृतेवंहिसिरि॥ तेनहिसकोठेष्ठयोकुरि
आशबाहतीकदाननिद्या॥१५॥ आत्रेका॥ सीतंबनंदाचासिरारी॥ उगेसे
नाविसेवाकरि॥ माझीयेकेठीयोरी॥ मिथ्यामुरारीम्मणसीला॥१६॥ तु
वोशदुनिकावाचेदान॥ गुरुउत्रभाणीलाएयाईद्रकेलामानहाते॥

१७॥

गोकुविषद्वत्तवरतानं ॥१८॥ ईतरां विगेष्टिकाईसी॥ होउनिवष्टेंवष्ट
 पौसी॥ वेदाल्य विलेविषायासी॥ सेरिविंगोचक्षा होसीनंदाच्या॥ १९॥ बाण
 कैवारालागुनी॥ सीउभालो व्यति कोपोनी॥ तोनुबांडिकिलो आर्घ्यूण
 सारंगपाणीविष्वम्बरा॥ २०॥ तुझीमेटिव्यावयाकारणे॥ उहंठावाहिजेन
 नायेणे॥ खाल्पणव्यपट्टवारानणे॥ तुरसीक्षेटिवाठणेंसवेदा॥ २१॥ तुमसे
 काजयंचानन्॥ सरयकरावयाजुना॥ शीरसागरीरघोनियाजाण॥ इस्ता
 नारायेणमेटले॥ २२॥ धादोहिके टीच्येरवडी॥ संतजाणतिव्यावडी॥ दोधा
 हिमिरिपडलिगाढी॥ तिजासामान्यामेज्जा॥ २३॥ इहुणीविरालाना
 रायेण किनारायेणमान्जिदे॥ धानाहीमहिदोनिपण॥ सरम् ॥२४॥
 परिपुणियकत्र थ तोनुमान्यामेज्जा॥ नकैबारी॥ लिघ्नविग्रहवावता
 २५॥ रथारी व्यावदारथीसिनानासा॥ हरनोव्यारीश्रीकृष्ण॥ २६॥ यापरी
 गान्धीकैश्ची व्यगद्यमहिमानुजपासी॥ येच्चिव्यावनारीव्याह्नासि प्र
 तितीसिपैभालं॥ २७॥ व्याखडेरम्बयाचित्तीनी॥ व्यानावृत्तशान सु
 त्रिः व्यद्वयानंदानाहीच्युति॥ व्यच्युतनिच्छिनी याहेतु॥ २८॥ ऐसा
 हुंव्यनंतव्यपरां पर॥ नियंस्याईस्वरान्वाईस्वर॥ नक्षितुमक्कर

तोहि प्रकार यावद्यारी ॥२८॥ पद ॥ यो रोचय सहमुगः स्वयनी
स्वराणी ॥ टीका ॥ देवां दुर्लभज्ञो न मस्कारा ॥ तीनुरी संघणी बान
रा ॥ क्षेमदे सिरामन्चद्रा ॥ लिङ्गावतारा चेति नाट्ये ॥ २९॥ तु वां बोलावें
द्धपाकरनी ॥ याला गिवेद तिष्ठ सावद्यानी ॥ तो तुं वानरा चौका ॥ गुज अ
च्छ चौनि सागसी ॥ ३०॥ तु ज्ञेन्हानमकल वेद वासन्त्रा ॥ तो तु विचार पुस्त
सी बानरा ॥ बनु सरोनि हाति पामत्रा ॥ उपाए द्वारा वर्तसी ॥ ३१॥ या
गती चिंघवदानै प्रांजकें कदाने विजेय इकाक ॥ तो तु वानरा चिवन
फछ रवा स्विद्धपाव वेत्स ॥ ३२॥ रेत्सेनकान्वेनि निप्रमा ॥ प्रतिपा
छिसी मेघशामा यातु जमा जिन हि विद्राम ॥ तु यामारा मज्जगाची
॥ ३३॥ तु भूयामि निजसरवा ॥ परमामाहृद
यस्तदेशवा ॥ तु जमानि भुता ज्ञानिकं ॥ मिन्न अबां कां आसना ॥ ३४॥ तु
जडातें चेत विना ॥ मुटातें शानदाना ॥ सकल जिवावाव्यानं द विना
हुझिया चित्सना जगनादि ॥ ३५॥ मामापि खाया चें सरवृष्टि दे रवा ॥ तो प्र
पंच युक्त आवां का ॥ तु हृदयस्तनिजसरवा ॥ सकल छाका को सूखदीता
॥ ३६॥ ऐसा तुं सर्वांचा हृदस्तु ॥ सर्ववेद्यवृत्ति वनि समर्थु ॥ जाणस्तो हृदई

१
चावतानु स्वामिस्तुपावंदुदिनोचा ॥३४॥ यापरिग्राहृषि के री ॥
दिनदयानिजमन्त्रासि ऐसीयासंदुनिख्यामिसि ॥ केषधनधासि
भजल ॥ ३५॥ उद्घउवाचे ॥ अंट्टादिलाङ्गसुदधिते श्वरमा
श्रीता नामसकारादंख्यामिति स्तुजत्वोन्मु ॥ कोवास
खक्किमपिस्मृग्यन् ॥ अंट्टादिलाङ्गसुदधिते श्वरमा

३६॥ नः ॥ ३७॥ ठीका ॥ विधता आणिही हर ॥ हे मायागुणीगुणवतार
तुमायानियनाईखर ॥ मन्त्र निषण असुखदाता ॥ ३८॥ सानुसीकरी ॥ ३८॥
सि तांनिजमन्त्री ॥ च्याङ्गीपुरुषार्थ च्याङ्गीमुक्ति ॥ मन्त्रालिदांग यीये
ती ॥ येक ठीप्रीनिजमन्त्रा ॥ ३९॥ निजमन्त्रांचमनोगत ॥ तुचिजा
णतामगवत ॥ हर्दईचहदयस्तु ॥ जाणोनिसर्वार्थितुदेसी ॥ ३९॥ मा
वायचिमोक्तेपण ॥ जाणतानुयेक श्रीदक्षण ॥ तुजवेगव्वहेलक्षण
आणिकासिजाणहेकबना ॥ ४०॥ ऐसा स्वामीनुउत्तमोत्तम ॥ तुसनि
साधकासुरवपरम ॥ आणिकनाहोतुजस्म ॥ तु स्वामीपुरुषात्म
सर्वांचा ॥ ४०॥ तुसर्वाचास्वामिहोसी ॥ परी इतपाव्वनिजमन्त्रासी

अमीविरादीनानाबाधेसि ॥ तुवाप्रहारासिसोउविले ॥ ८ ॥ नुज
भक्तं चीहमप्रबद्ध ॥ उतानचरणाचेनानेवान्ना ॥ करनियावैरा
ग्येसीव ॥ घुवासिअटक्क तुवाकेलें ॥ अधाकोउबंघुविशिरण ॥ तु
जेअजालाभ्यनन्यत्तरण ॥ याचेफापेस्तवजाण ॥ स्तकुचीत्तरणउ
द्यरिला ॥ ९ ॥ दुवेबांघलेवक्षीस्ती ॥ देखिहमाउपजुलीकेसी ॥ त्ता
चेद्वारीद्वारपालहोसी ॥ निजलाजसिगाडुनी ॥ १० ॥ एसीमकद
पानुजपासिं ॥ मकहदयस्त्रजाणसीमरेसियासोइनिजला
मिसि ॥ कोणघनाघासीमज्जग्ध ॥ देहादिरेद्रियजेसुखमासे ॥ ने
तुसेनासुखावलेवै ॥ तानुस्तक्कसुखमावैवै ॥ असद्वान
यासें ॥ निजमक्तं ॥ ११ ॥ सा त्तुजाण ॥ नीतुमामहिमा ॥ नुसानियांचा
असद्वासा ॥ मक्तप्रियेपुक्तक्कानमा ॥ तुसासुखाचिप्रेमा ॥ वाप्रमेय
॥ १२ ॥ तुसेसवेचेनिसंतोषें ॥ मक्तसुखावलेनिजमानसें ॥ सासिरे
हुइयजन्मदुख ॥ स्वप्रीहींसन्मुरवेकदानकहनी ॥ १३ ॥ तुस्यामजनेसु
खेत्तस्तक्क ॥ विचार्यासोनिविरक्त ॥ ताज्यसमुद्रवक्कयांकित ॥ यु
कोनीसांडिततुठवें ॥ १४ ॥ स्तक्कमागवैसी ॥ स्वर्गवाक्यांम

कूंपासि नेउपक्षीतितयासी जेविराजहंसीगोमये ॥८॥ जेवि
नटब्बेभजना चाठाई ॥ नेतुसुरवस्पकरिसीपाहिं ॥ देहियासतीशि
विदेही ॥ सर्वरिर्समसाम्य ॥ ८॥ एसार्वामितुहृषीकेशी ॥ सदानि
श्वसीनिजसक्षापासि ॥ करिणवृनाहिसेवेसि ॥ कैसेल्लणसिरेतेरेक

॥ ८॥ जापनलगपरदेशासि ॥ यानस्वरनाहीसेवसी ॥ भज्ञानिके
टजाहृषीसी ॥ तुहृदयनिवारीपरमामा ॥ ९॥ सेवेलागिनलगेघ
न ॥ नारीरकष्टनलगतिजायें ॥ तुसररण्डिविलियामन ॥ तुस्थि

चें मदघमनुरुसी ॥ १०॥ तुनुष्टेनिकर्त्तीसीऐसें ॥ साडसीप्रथंचारिंसें
त्रिशुणेंसीवीपुरिनारोंज्ञानामासि ॥ ११॥ निमिष्योनिसि
ज्याचेव्यापार ॥ तुसेनिचालनात्ताचार ॥ तुससेवेसिविमुखनर ॥ ते
पामरभासाग्यें ॥ १२॥ तुसीसेवासुरवस्पकेवढ ॥ नीसितपशुनिया
वरवढ ॥ विशयांचेविराघवकुद्दोवढ ॥ जेसर्वकाव्वाहितींज्याविशयां ॥ १३॥
चाविशयलेन् ॥ शियानिजसुरवाकरीनासु ॥ जन्ममरणाचाविकासु
दुःखव्यासासुभोगवी ॥ १४॥ यांविशयांचेविशयदानै ॥ ईद्रमहिद्रकप
चित ॥ यानेंभजनीजेविषयस्वार्थ ॥ तेहिनिश्चितेंज्यासाग्यें ॥ १५॥ तुस्थि

दमपानुसेमका॒ सुखसंन्वया॒ तिसमर्थ॑ संसारीहोतिभ्या॒ तिवि॒
क्षा॑ हेनवलये॒ येनकदेवा॑ ६० तुसचरणे॒ षुजेसेविती॑ एषुलनका॑
दिनपती॑ साईद्रादिकविदिक्षा॑ पायांलागतीरिघिसीधी॑ ६१ आक
ल्पकरितांतपस्तीती॑ ज्यासि॒ धीचिनकेप्राप्ती॑ यासि॒ द्विसृज्ञाना॑
रणयेती॑ एवंश्चएभज्ञीरेसीतुर्ति॑ ६२ आणिकेसाधनेनकरि॑
ता॑ तुसेमजनीरेवितांचिता॑ सर्वसिद्धिहोतिक्षरणरगता॑ स्व
भावतोभज्ञासी॑ ६३ आपातुसेमजकारा॑ भज्ञासिद्धाडलआपा॑
र॑ यासितैचिद्वडप्रयोपकार॑ द्वैचरणीसाचारजैवीर॑ ६४
कां नैचिविरालेपणे॒ ऐसै॑ ज्ञानी॒ तिविदि॑ विद्विप्रवेत्र॑ धटाकान्निच्या॑
निभ्याकान्नै॑ हारजैजैसेमन्त्रादिकारा॑ ६५ ऐसेतुजमाज्जिनवीरता॑
प्रयोपकारनयहाता॑ जोपुरवीसर्वस्वाधी॑ यासिविसरनांधः॑ प्र
पातु॑ ६६ उपउवाच॑ नैबोपयोपचिकारामस्तुवावृष्टा॑
युक्ताषापिदक्षमस्तुद्दमदः॑ स्वरैता॑ योनंविद्विस्त्र॑ मृत्युनैमस्तुभ॑
विद्युन्वन्नाचार्ययैसुवसुपास्वगतिंव्यज्जीगद्दाटीका॑



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com